नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

युद्धकालीन संकट के बावजूद अर्थव्यवस्था पटरी पर

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) द्वारा वित्त वर्ष 2026-27 की पहली द्विमासिक समीक्षा में ब्याज दरों को यथावत रखने का निर्णय केवल एक तकनीकी फैसला नहीं, बल्कि एक व्यापक आर्थिक संकेत है. यह संकेत इस बात का है कि वैश्विक स्तर पर युद्ध जैसे हालात और अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी पटरी पर बनी हुई है और उसमें स्थिरता का विश्वास कायम है.

आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा द्वारा घोषित इस नीति में रेपो रेट को 5.25 फीसदी पर स्थिर रखना, 'न्यूट्रल' रुख बनाए रखना और विकास दर के लिए 6.9 फीसदी का अनुमान देना,ये सभी संकेत करते हैं कि केंद्रीय बैंक फिलहाल किसी आक्रामक बदलाव के मूड में नहीं है. यह एक संतुलित दृष्टिकोण है, जिसमें न तो महंगाई को लेकर घबराहट है और न ही विकास को लेकर अत्यधिक चिंता.

दरअसल, मौजूदा वैश्विक परिदृश्य बेहद जटिल है. पश्चिम एशिया में अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव ने कच्चे तेल की कीमतों में अस्थिरता पैदा कर दी है. इसके साथ ही सप्लाई चेन में संभावित बाधाएं भी वैश्विक महंगाई को फिर से हवा दे सकती हैं. ऐसे समय में किसी भी केंद्रीय बैंक के लिए यह निर्णय लेना आसान नहीं होता कि वह दरों में कटौती करे, बढ़ोतरी करे या यथावत रखे. आरबीआई ने तीसरा रास्ता चुना है,स्थिरता का. यह निर्णय इस भरोसे पर आधारित है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में आंतरिक मजबूती मौजूद है. उपभोक्ता मांग बनी हुई है, निवेश का माहौल सकारात्मक है और सरकारी पूंजीगत व्यय भी विकास को गति दे रहा है. यही कारण है कि युद्धकालीन संकट के बावजूद आरबीआई ने विकास दर का अनुमान 6.9 फीसदी रखा है, जो वैश्विक औसत के मुकाबले कहीं अधिक सशक्त है. महंगाई के मोर्चे पर भी स्थिति नियंत्रण में दिखाई देती है. 4.6 फीसदी का अनुमान यह दर्शाता है कि मुद्रास्फीति अभी भी आरबीआई के लक्ष्य दायरे में है, हालांकि यह पूरी तरह से जोखिम मुक्त नहीं है. तेल की कीमतों में अचानक उछाल या वैश्विक आपूर्ति में व्यवधान इस संतुलन को बिगाड़ सकते हैं. लेकिन फिलहाल केंद्रीय बैंक को विश्वास है कि स्थिति संभाली जा सकती है.

आरबीआई का 'न्यूट्रल' रुख भी इसी संतुलन का प्रतीक है. इसका अर्थ है कि आने वाले समय में परिस्थितियों के अनुसार नीतियों में बदलाव की गुंजाइश खुली रखी गई है. यदि महंगाई बढ़ती है तो सख्ती संभव है, और यदि विकास पर दबाव आता है तो राहत दी जा सकती है. यह लचीलापन वर्तमान अनिश्चित वैश्विक माहौल में बेहद जरूरी है. आम लोगों के लिए इस फैसले का सीधा मतलब यह है कि उनकी जेब पर फिलहाल कोई अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा. होम लोन या कार लोन की ईएमआई में स्थिरता बनी रहेगी, जिससे उपभोग को सहारा मिलेगा. वहीं उद्योग जगत के लिए यह संकेत है कि ब्याज दरों में अचानक बदलाव की आशंका कम है, जिससे निवेश योजनाओं में स्थिरता बनी रहेगी.

कुल मिलाकर, आरबीआई का यह फैसला एक स्पष्ट संदेश देता है कि भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक उथल-पुथल के बीच भी संतुलन बनाए रखने में सक्षम है. युद्ध के साये भले ही गहरे हों, लेकिन आर्थिक मोर्चे पर देश ने अपनी दिशा और गति दोनों को नियंत्रित रखा है. यही आत्मविश्वास आने वाले समय में भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक स्थिर और भरोसेमंद शक्ति के रूप में स्थापित करेगा.

स्वास्थ्य एवं कल्याण इकोसिस्टम मजबूत बनाएंगे

प्रतापराव जाधव

> विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा जब भौगोलिक स्थिति या सामाजिक-आर्थिक हैसियत की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रत्येक नागरिक तक पहुंचेगी. होम्योपैथी, अपने गहरे सामुदायिक जुड़ाव और टिकाऊ दृष्टिकोण के साथ, इस लक्ष्य को हासिल करने का मार्ग प्रशस्त करती है. हमारी स्वास्थ्य प्रणाली की असली पहचान उसकी अत्याधुनिक सुविधाओं में नहीं, बल्कि हाशिए पर रहने वाले लोगों की सेवा करने की उसकी क्षमता में निहित है. जब एक सरल और किफायती उपाय किसी दूरदराज के गांव में एक परिवार को राहत पहुंचाता है, तो यह इस सशक्त विचार को पुष्ट करता है - कि भारत में स्वास्थ्य सेवाएं अधिक समावेशी, अधिक मानवीय और वास्तव में सार्वभौमिक होती जा रही हैं.

अब जबकि भारत सभी के लिए न्यायसंगत, समावेशी और समग्र स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे के सपने को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, हमें एक मौलिक प्रश्न पूछना होगा- हम अंतिम गांव के अंतिम व्यक्ति तक सही समय पर गुणवत्तापूर्ण देखभाल पहुंचना कैसे सुनिश्चित करें? इसका जवाब केवल बुनियादी ढांचे के विस्तार या उन्नत प्रौद्योगिकियों के उपयोग में ही नहीं, बल्कि उन प्रणालियों को मजबूत करने में भी निहित है जो स्वाभाविक रूप से सुलभ, सस्ती और समुदायों के भरोसे पर खरे उतरते हों.

इस संदर्भ में, होम्योपैथी भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के साथ-साथ एक मौन लेकिन शक्तिशाली ताकत के रूप में उभर रही है और जमीनी स्तर पर समग्र स्वास्थ्य से जुड़े बुनियादी ढांचे को बदल रही है. हम यह दिखाई दे रहा है कि होम्योपैथी कैसे जनजातीय क्षेत्रों, ग्रामीण इलाकों और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी वाले शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की आपूर्ति से जुड़ी महत्वपूर्ण कमियों को दूर कर रही है. इसके प्रभाव का पता केवल व्यापकता से ही नहीं, बल्कि सबसे अधिक जरूरत वाले स्थानों - यानी अंतिम छोर - तक पहुंचने की क्षमता से भी चल रहा है. अब जबकि हर वर्ष 10 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'विश्व होम्योपैथी दिवस' करीब है, यह इस बात पर विचार करने का एक सही मौका है कि यह प्रणाली केवल व्यक्तिगत कल्याण ही नहीं बल्कि समग्र कल्याण का एक ऐसा मॉडल बनाने में भी योगदान दे रही है जो किफायती, पर्यावरण के अनुकूल और सामाजिक रूप से समावेशी हो.

इस वर्ष विश्व होम्योपैथी दिवस की थीम सतत स्वास्थ्य के लिए होम्योपैथी है. 18वीं शताब्दी में सैमुअल हैनिमैन द्वारा विकसित और 19वीं शताब्दी में भारत लाई गई, होम्योपैथी सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंचर यानी समान से समान का उपचार के सिद्धांत पर आधारित है. दशकों से एक समग्र और रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए, यह भारत की बहुआयामी स्वास्थ्य एवं कल्याण प्रणाली का एक अभिन्न अंग बन गई है. जमीनी स्तर पर होम्योपैथी की सबसे बड़ी खूबी इसकी निरंतर देखभाल सुनिश्चित करने की क्षमता है. कई पिछड़े इलाकों में स्वास्थ्य सेवा टुकड़ों में बिखरी हुई नहीं होती, बल्कि निरंतर और रिश्तों से सचालित होती है. होम्योपैथी का व्यक्ति-केन्द्रित उपचार का दृष्टिकोण, खासतौर पर पुरानी बीमारियों, बार-बार होने वाले सक्रमणों और जीवनशैली संबंधी विकारों के प्रबंधन के क्रम में चिकित्सक और रोगी के बीच दीर्घकालिक जुड़ाव को बढ़ावा देता है. यह निरंतरता उपचार के प्रति रोगी के समर्पण और समग्र स्वास्थ्य से जुड़े नतीजों में उल्लेखनीय सुधार करती है. आज भारत में 290 से अधिक होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल हैं. साथ ही, देशभर में चिकित्सकों का एक विशाल नेटवर्क भी उपलब्ध है. फिर भी, होम्योपैथी के असली प्रभावों को संस्थानों में नहीं बल्कि जमीनी स्तर पर - झारखंड के जनजातीय जिलों, छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्रों में और हिमाचल प्रदेश की दूरदराज की बस्तियों में - बेहतर ढंग से समझा जा सकता है. वहां एक अकेला चिकित्सक भी सामुदायिक स्वास्थ्य से जुड़े नतीजों में बदलाव ला सकता है.

होम्योपैथी की प्रमुख खूबियों में से एक इसकी सरलता भी है. दवाइयां किफायती होती हैं, इन्हें लाना-ले जाना आसान होता है और इनके भंडारण के लिए किसी जटिल भंडारण संरचना की जरूरत ही नहीं होती है. कमजोर आपूर्ति श्रृंखलाओं और सीमित स्वास्थ्य सेवा कर्मियों वाले इलाकों में, होम्योपैथी की ये विशेषताएं अनमोल हो जाती हैं. जनजातीय समुदायों, जो हमारी आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और अक्सर बीमारियों का बेमेल बोझ झेलते हैं, के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को सांस्कृतिक रूप से भी अनुकूल होना चाहिए. होम्योपैथी का सौम्य और गैर-आक्रामक रवैया पारंपरिक उपचार पद्धतियों के अनुरूप है, जिससे यह अपेक्षाकृत अधिक स्वीकार्य और सुलभ हो जाता है. इसी क्षमता को पहचानते हुए, भारत सरकार ने होम्योपैथी को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवाओं साथ जोड़ने के लिए कई कदम उठाए हैं.

[लेखक आयुष राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हैं]

महाकौशल की डायरी

निजाम बदला और बदल गया मिजाज...

अविनाश दीक्षित

नगर सत्ता और प्रशासन के खिलाफ विपक्ष के नेता अगर आवाज बुलंद करें तो समझ में आता है कि विषय को राजनैतिक उद्देश्यों से जोड़ा जा रहा है लेकिन कहीं अगर भाजपा के ही विधायक अपनी सरकार या जिला प्रशासन के खिलाफ आवाज बुलंद करें तो हैरानी की बात होगी ही. अक्सर अपनी पार्टी के कद्दावर नेताओं के खिलाफ मुखर रुख अपना लेने वाले जबलपुर के पाटन से विधायक व भाजपा के कद्दावर नेता अजय विश्नोई ने जबलपुर कलेक्टर राघवेंद्र सिंह पर पुस्तक मेले में ध्यान न देने का आरोप लगाते हुए अपने एक्स एकाउंट में पोस्ट करते हुए जैसे ही लिखा कि निजाम बदला और बदल गया मिजाज .. तो चर्चाओं का नया बाजार गर्म हो गया. वहीं विपक्ष के खेमे में भी विधायक की पोस्ट को लेकर तरह तरह की चर्चाएं हुईं.

पोस्ट में विधायक ने स्पष्ट लिखा कि वर्ष 2024 में पूर्व कलेक्टर दीपक सक्सेना ने

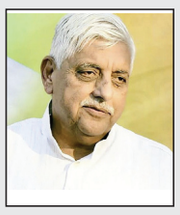

जबलपुर में पुस्तक मेले की शुरूआत की थी जिसका मुख्य उद्देश्य था कि अभिभावकों को कम दामों में पुस्तक मिलेंगीं. लेकिन इस बार मौजूदा कलेक्टर की ढीलाढाली के चलते पुस्तक विक्रेताओं के हौंसले बुलंद हैं और ऊंचे दामों में अभिभावकों को बच्चों की पुस्तकें मेले में मिल रहीं हैं. कुल मिलाकर ये कहा जा सकता है कि भाजपा विधायक ने पुस्तक मेले की अनियमितताओं को लेकर प्रशासन की हकीकत दिखाने की कोशिश की. विधायक का ये तंज जिला प्रशासन के जिम्मेदारों को कांटे की तरह चुभ रहा है. देखना होगा कि विधायक की पोस्ट का असर जिला प्रशासन पर किस हद तक पड़ता है और बाजार में अब भी चल रही पुस्तक विक्रेताओं की मनमानी पर फिर से रोक लगती है या नहीं. उधर भाजपा के अन्य विधायकों व पार्टी कार्यालय में अंदरूनी चर्चाएं व्याप्त हैं कि विधायक जी को कोई समस्या थी तो वह व्यक्तिगत रूप से कलेक्टर से बात कर लेते, सार्वजनिक रूप से प्रशासनिक हकीकत दिखाने की क्या जरूरत थी...? बहरहाल ऐसे सवाल किसी ने विधायक के सामने नहीं पूछे, मगर भाजपाईयों के बीच यह सवाल मेला समाप्त होने के बाद भी सुर्खियों में है.

खुशियां ऐसी मनाईं जैसे लग गई हो लॉटरी

जबलपुर के स्वास्थ्य विभाग के इतिहास में कुछ दिन पहले वो हुआ जो शायद आज तक नहीं हुआ. हुआ ये कि पहले तो स्वास्थ्य विभाग में घोटाले के आरोप में सीएमएचओ डॉ संजय मिश्रा को निलंबित करके भोपाल अटैच किया गया और फिर शहर की सड़कों में आतिशबाजी के बाद लड्डू बांटकर ऐसी खुशियां मनाईं गईं जैसे किसी की लॉटरी लग गई हो.

मालवीय चौक में आतिशबाजी, लड्डू वितरित होता देख आमजन ने पूछा कि भाई ये जश्न किस चीज का है तो आयोजकों से जवाब मिला कि भाई आप तो मिठाई खाईए, अपने जबलपुर के स्वास्थ्य विभाग में बीते 2 सालों से जमी सिंडीकेट की चेन टूट गई है और सीएमएचओ साहब निलंबित होकर चले गए हैं. मतलब साफ था कि भ्रष्टाचार के तमाम आरोपों से घिरे सीएमएचओ डॉ. संजय मिश्रा के जाने की खुशी सभी को थी और उनके जाने के बाद जश्न सड़कों पर भी मनाया गया.

पिंजरे की जाली तोड़कर भागा तेंदुआ...!

वेटरनरी यूनिवर्सिटी के वाइल्ड लाइफ सेंटर में आने वाले वन्यजीवों की सुरक्षा को लेकर प्रबंधन कितना गंभीर है, इसकी पोल उस वक्त खुली जब नरसिंहपुर जिले से इलाज के लिए यहां आया तेंदुआ पिंजरे से अचानक गायब हो गया. खबर फैली कि तेंदुआ पिंजरे की जाली तोड़कर निकल गया है. जाहिर है कि जो जाली थी वो कमजोर अवस्था में थी जिस कारण इतनी बड़ी गफलत हुई. आनन फानन में वन विभाग को सूचना देकर बुलाया गया और तत्काल वेटरनरी यूनिवर्सिटी के वाइल्ड लाइफ सेंटर के सभी गेट बंद कराए गए और इमरजेंसी सर्चिंग अभियान शुरू किया गया. प्रबंधन की सांस में सांस तब आई उस जब उन्हें पता चला कि तेंदुआ बड़े पिंजरे के किनारे बैठा है. खबर है कि मौके पर पहुंचकर वन विभाग की टीम ने ट्रैक्विलाइज गन से उसे पहले बेहोश किया, इसके बाद उसे वापस केज में डाला. उधर तेंदुआ के पिंजरे से निकलने की घटना के बाद सेंटर के अधिकारी अब बाड़े या पिंजरे में टूटी जाली और दीवार के पास छूटी हुई जगह को भी पैक कराने के लिए बेल्डिंग और मरम्मत कराने में जुट गए हैं.

सीजफायर के बाद इजराइल का क्या होगा?

जंग के मैदान से अमेरिका तुरत-फुरत में अलग तो नहीं हो पाया, लेकिन बिगड़ते हालात के बीच दो हफ्तों के लिए जंग अस्थायी तौर पर रुक गई है. क्या इससे ईरान, हिजबुल्ला मजबूत होंगे? क्या दो हफ्तों के बाद अगर जंग हुई तो अमेरिका दोबारा लौटेगा? जानकार संशय जता रहे हैं. ऐसे में अगर दो हफ्तों के बाद स्थायी तौर पर जंग न रुकी, तो इजराइल ईरान के सामने अकेला पड़ जाएगा. युद्ध में अकेले फंसने पर इजराइल का क्या होगा? क्या सीजफायर के दौरान अमेरिका और इजराइल के रिश्तों में क्रांतिकारी बदलाव आ सकते हैं? इस टर्निंग पॉइंट के बाद या तो नया जिम्मेदार इजराइल उभरेगा या फिर उसका अस्तित्व ही नष्टप्राय हो जाएगा. युद्ध जरा भी लंबा खिंचता है, तो ट्रंप ने अपना एक्जिट प्लान तय कर रखा है. अब तक हुई अमेरिकी सैनिकों की मौत, भारी आर्थिक बर्बादी, रक्षा विभाग के लिए फंड की कमी, कांग्रेस की असहमति, घरेलू राजनीति में अलोकप्रियता, खुद की गिरती रेटिंग से डोनाल्ड ट्रंप इतने बौखला गए थे कि स्वनिर्मित तर्कों के आधार पर वह खुद को स्वयंभू विजेता घोषित करने लगे थे और औपचारिक सीजफायर के पहले भी वह मैदान

सेबाहर जाने के रास्ते देख रहे थे. अगर सीजफायर नहीं हुई होती, तो इजराइल को हर हाल में जंग जारी रखनी पड़ती. अगर सीजफायर की अवधि समाप्त होने के बाद अमेरिका फिर से जंग में नहीं लौटता और इजराइल अपनी नाक बचाने के लिए फिर से जंग छेड़ देता है, तो ईरान इस बार इजराइल पर कहीं ज्यादा हमलावर होगा. इस स्थिति में वह खाड़ी देशों पर हमले सीमित कर इजराइल के विरुद्ध युद्ध को खींच सकता है, इससे इजराइल की मुसीबतें बढ़ेंगी. युद्ध अमेरिका और इजराइल ने मिलकर शुरू किया था, तब क्या ऐसी शर्त थी कि कोई भी अपनी सुविधानुसार मैदान छोड़ देगा? अमेरिका और इजराइल के रिश्तों में बदलाव की जमीन तो तैयार है, यदि आगे की घटनाओं ने प्रत्याशित मोड़ लिया तो कुछ बातें इजराइल को अमेरिका से दूरी पर मजबूर करेंगी. अमेरिका के लिए इजराइल पश्चिम एशिया में एक स्थिर, विश्वसनीय और तकनीकी रूप से उन्नत साझेदार है. इजराइल की सैन्य क्षमता का बड़ा हिस्सा अमेरिका की सालाना तकरीबन 4 बिलियन डॉलर अमेरिकी सैन्य सहायता और हथियारों पर निर्भर है.

-संजय श्रीवास्तव

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

नेता व आंदोलनकारी की खूबी उमा भारती बेचतीं पोहा-जलेबी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, कैसी नौबत आ गई कि मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने अपने चुनाव क्षेत्र टीकमगढ़ में ठेला लगाकर पोहा और जलेबी बेची! नेताओं को तो कुशल विक्रेता या सेल्सपर्सन की तरह मोहक वादे और लुभावने आश्वासन बेचने चाहिए. यह पोहा और जलेबी बेचने की धुन क्यों सवार हुई ?'

हमने कहा, 'जनता से वास्ता रखना है तो नास्ता बेचना पड़ता है. प्रधानमंत्री मोदी ने खुद बताया था कि बचपन में वह गुजरात के वडनगर रेलवे स्टेशन पर चाय बेचा करते थे. चाय के प्रति उनका लगाव आज तक खत्म नहीं हुआ. वह असम में चुनाव प्रचार के लिए गए तो चायबागान में जाकर पीठ के पीछे टोकरी बांधकर मजदूर महिलाओं के साथ चाय की पत्ती चुन-चुन कर तोड़ने लगे. इस तरह ये नेता संदेश देते हैं कि कर्मठ बनो. दुनिया में कोई काम छोटा नहीं है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, पूर्व केंद्रीय मंत्री उमा भारती जमीन से जुड़ी हैं. उन्होंने अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के खिलाफ इस तरह सड़क पर पोहा-जलेबी बेचकर विरोध

दर्शाया और अधिकारियों से गरीबों की रोजी-रोटी नहीं छीनने की अपील की. जब सरकार किसी को नौकरी-रोजगार नहीं दे सकती तो शांति से ठेला लगाकर अपने परिवार की गुजर-बसर करने वाले युवाओं के खिलाफ क्यों एक्शन लेती है? मध्य प्रदेश में बीजेपी की सरकार है और उमा भारती भी बीजेपी की वरिष्ठ नेता हैं लेकिन फिर भी उन्होंने अपनों के ही खिलाफ इस तरह आंदोलन किया.'

हमने कहा, 'उमा भारती बचपन से ही प्रवचनकार रही हैं. वह जानती हैं कि अन्न ही परम ब्रम्ह है. भूखे भजन ना होई गोपाला! इसलिए उन्होंने पोहा बेचा. सुदामा के तंदुल या पोहे कृष्ण भगवान ने बड़े प्रेम से खाए थे. महाराष्ट्र में जब लोग शादी के लिए लड़की देखने जाते हैं तो वह पोहा बनाकर लाती है. चावल ऐसा अन्न है जिससे पोहा, लाही, मुरमुरा सब बनता है. इडली-डोसा भी चावल से बनता है.'

हमने कहा, 'आपको याद होगा कि उमा भारती मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री थीं तभी कर्नाटक के हुबली में झंडा सत्याग्रह हुआ. उसमें भाग लेने के लिए उमा ने सीएम पद से इस्तीफा दिया और अपनी कुर्सी बाबूलाल गौर को सौंप दी. जब वह वापस लौटीं तो बाबूलाल ने उन्हें मुख्यमंत्री पद वापस नहीं लौटाया. उमा भारती के जलेबी बेचने पर आश्चर्य मत कीजिए. राजनीति भी जलेबी के समान ही गोलमोल रहती है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12224 - डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं
1. पक्षी, सूर्य, एक देववर्ग (सं.) 4. दोगला, जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के माता-पिता से हुई हो 7. नाड़ी, रग 8. बाजा बजाने वाला 9. आसमान के रंग का, सौ खरब की एक संख्या 11. नायक, अगुवा, सिखों की पदवी 12. पैर में पहनने का एक गहना जो चलने पर झनझनाता है 15. असभ्य, मूर्ख 17. साहूकार, भला आदमी, साधु, धनी 18. लंबा-चौड़ा, विस्तार वाला, महत्व का 19. समकालीन राजाओं में सबसे बड़ा, फिल्म उमरावजान के गीतकार (उर्दू) 21. साथ रहना

ऊपर से नीचे
1. प्रार्थना, नम्रता, प्रणति, आचरण, शिष्टता (सं.) 2. बड़ी-बड़ी झीलों में रहने वाला बत्तख की जाति का एक जलपक्षी 3. जो नशे के कारण सुस्त हो (सं.) 4. संवाद या समाचार देने वाला 5. देह की ऊंचाई-लंबाई, डील (उर्दू) 6. धन, धन की राशि (उर्दू) 10. राज्य, देशी रियासत 12. वह धर्माचार्य जो ईश्वर का संदेश मानव मात्र को सुनाने आता है, नबी (उर्दू) 13. जल, पानी, रस 14. रुकना, थमना, टिकना 16. एक पेड़ का बीज जिसे कूटकर चाय के समान पीते हैं 17. छाया, छांह, परछाई 19. श्रेष्ठतर, शतरंज के खेल में ऐसी चाल जिससे बादशाह पर घात पड़ती है 20. वनस्पतियों-फलों आदि का निचोड़ा हुआ तरल अंश, स्वाद

Solution 12223

हि	तो	प	दे	श		खू	न
म		र		क	स	ब	ल
मा	त	म		र	त		
न	ट		क	पा	ल	क्रि	या
व		व	न	रा	ज		कू
	आ		खि			रा	त
म	हा	मा	या		प	क्ष	
न	र	मा	ना		र	स	ज्ञ

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा. जीवन आनन्ददायक रहेगा. अध्ययन के प्रति आकस्मिक यात्रा का योग है, आर्थिक संसाधनों में सामान्य सुधार होगा. पारिवारिक समस्याओं से कष्ट होगा. वर्ष के मध्य में राजनीति के क्षेत्र मेंपरिवर्तन हो सकता है. लाभप्रद समाचार मिलेगा.

मेष और वृश्चिकराशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम के बाद आंशिक लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आर्थिक संसाधनों मेंसुधार होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा में यथेष्ठ सतर्कता बांछनीय. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनीति में मित्र द्वारा सहयोग प्राप्त होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, गौरवर्ण का लंबे कद का दुबला पतला एवं बुद्धिमान और जिद्दी-मनमौजी होगा, किसी की नहीं सुनेगा, मित्रों की संख्या अधिक होगी, इंजीनियरिंग में तरक्की करेगा, माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

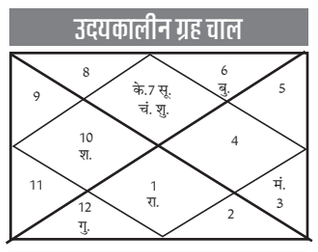

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण अष्टमीं भृगुवासरे रात 7/35, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे दिन 8/23, शिव योगे दिन 3/43, बालव करणे सू.उ. 5/45, सू.अ. 6/15, चन्द्रचार धनु दिन 2/52 से मकर, पर्व- श्री शीतलाष्टमीं व्रत, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण अष्टमीं को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से गुड़-खांड, शक्कर, नारियल, छुहारा, बादाम, कुम्भ के भाव में तेजी होगी, अलसी, अरंडी, सींगदाना, में नरमी रहेगी, जूट, पाट, बारदाना, हैसियन, में समता रहेगी, भाग्यांक 3787 है.

मेष- सामाजिक कार्यों में शामिल होकर मन को खुशी मिलेगी, भावनात्मक संबंध बढ़ेंगे, अधिक वाकपटुता से काम बिगड़ सकता है, वार्तालाप संयमित रखें.

वृषभ- कार्यक्षेत्र में सहयोग लाभदायी रहेगा, यात्रा मे उठाईगीरों से सावधान रहें, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त हो सकता है.

मिथुन- अधिकारियों का मेलजोल लाभदायक रहेगा, इच्छित कार्यों की रूपरेखा बनेगी, सफलता प्राप्त होगी, मन में हर्ष और उत्साह बना रहेगा.

कर्क- मन की बात मित्रों से कह दें, तनाव कम होगा, पारिवारिक यात्रा हो सकती है, यश मिलेगा. नौकरी में व्यस्तता रहेगी, तनाव की स्थिति से बचें.

सिंह- नये कार्य के लिये जरूरी धन की व्यवस्था कर लेंगे, मानसिक प्रसन्नता होगी, व्यापार में सफलता प्राप्त होगी, परेशानियों का निवारण होगा.

कन्या- घरेलू आयोजन में भाग लेंगे, मातृपक्ष से विशिष्टजनों का समाचार मिलेगा, मतभेदों से बचने का प्रयास करें, मार्गदर्शन मिलेगा.

तुला- मित्रों से किया गया वायदा निभाने में मुश्किल होगी, व्यापार में सफलता मिलेगी, महत्वपूर्ण समाचारों की योजना बनेगी, जरूरी विचार विमर्श होगा.

वृश्चिक- रूखे व्यवहार से परिचितों को नाराज कर सकते हैं, नवीन योजना बनेगी. शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मान सम्मान की प्राप्ति होगी.

धनु- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, दिखावे के कारण कर्ज हो सकता है, अतिथि आगमन होगा, परिजनों के सहयोग से कार्यों में सफलता मिलेगी.

मकर- विपरीत माहौल में खुद के लिये अनुकला बना लेंगे, संतान संबंधी कार्यों में व्यस्तता रहेगी, नवीन कार्यों के प्रति मन का झुकाव रहेगा.

कुम्भ- प्रापर्टी संबंधी मामले सुलझने की उम्मीद है, अधिनस्थ लोगों का सहयोग मिलेगा, बेरोजगारों को प्रयास करने पर रोजगार मिलेगा.

मीन- कारोबारी विस्तार की संभावना, आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी, कुटुम्बियों का सहयोग प्राप्त होगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

SUDOKU 7356

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7355

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1